(स्नातक अंतिम वर्ष प्रतिष्ठ के विद्यार्थियों के लिए)

विषय – राजनीति विज्ञान, पत्र : viii
विषयवस्तु – भारतीय राष्ट्रीय जागरण : प्रकृति, महत्व एवं सीमाएं
द्वारा :– सिद्धू कुमारी
सहायक प्राध्यापक
जगजीवन महाविद्यालय, आरा

भारतीय राष्ट्रीय जागरण : प्रकृति, महत्व और सीमाएं

भारतीय इतिहास का 19वीं वां शतक भारत का पुर्नतागरण काल था। ये वो समय था जब दशकों से धर्म के अंधकार में डुबे हुए हमारे समाज में सामाजिक चेतना जागृत हुई। औपनिवेशिक शासन की बेड़ियों में जकड़े हुए हमारे समाज में स्वराज की मांग बलवती हुई। राष्ट्रीय चेतना का प्रचार प्रसार हुआ। टूकड़ों में बंटे हुए भारत को; जाति, धर्म, वर्ग और लिंग भेदभाव से ग्रसित भारत को एकजूट करने की भावना प्रबल हुई और इसके लिए प्रयास शुरू हुए। इसके लिए सबसे पहले भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों का दूर करना जरूरी था। जिसका मार्ग धार्मिक सुधारों से होकर आता था। अतः इसके लिए पूरे भारत वर्ष में प्रयास शुरू हुए। इन सुधार आंदोलनों की कुछ साझी **प्रकृति** स्पष्ट होती है, जो निम्नलिखित है :–

- **सुधारवादी :–** 19वीं शदी का राष्ट्रीय जागरण मुख्य रूप से सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में व्याप्त रूढ़ीवादीता, शोषण, पाखण्ड और अवैज्ञानिकता के विरूद्ध एक सुधार आंदोलन था। भारतीय समाज के मूल्य और रीति रिवाज मुख्यतः धर्म पर आधारित थे, अनेक कुरीतियों का समर्थन धार्मिक परम्पराओं के आधार पर किया जाता था। अतः सामाजिक व्यवस्था में सुधार के लिए धर्म के आधार पर व्याप्त कुव्यवस्था को दूर करने की कोशिश तत्कालीन समाज के प्रबुद्ध वर्ग के द्वारा की गई। राजा राममोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, ज्योतिबा फूले आदी इस श्रेणी के विद्वतजन थे।
- **पुनरोत्थानवादी :–** तत्कालीन राष्ट्रीय जागरण की प्रकृति पुनरोत्थानवादी भी थी। समाज का एक वर्ग ब्रिटिश हुकुमत द्वारा भारतीय धर्म और परम्परा के विरूद्ध फैलाए जा रहे दुष्प्रचार से क्षुब्ध था। अतः इनका उद्देश्य वैदिक कालीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति के प्रभाव में तत्कालीन हिन्दू समाज में व्याप्त अतार्किक परम्पराओं को दूर कर भारतीय जनमानस को उसके विरूद्ध जागरूक करना था। आर्य समाज और थियोसोफिकल सोसायटी जैसे संगठनों ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- **मध्यवर्गीय स्वरूप :–** 19वीं सदी में भारत के राष्ट्रीय जागरण पर भारत के मध्यवर्गीय शिक्षित वर्ग का प्रभाव था। पश्चिमी शिक्षा प्राप्त भारत का मध्यवर्ग भारतीय समाज में व्याप्त सती प्रथा, बाल विवाह, कन्या शिशु हत्या, स्त्री शिक्षा तथा समाज में महिलाओं की शोचनीय स्थिति और जाति, छुआछुत, बहुपत्नी प्रथा जैसी समाजिक समस्याओं और पुरोहितवाद, धार्मिक कर्मकाण्ड, धार्मिक

अंधविश्वास जैसी धर्म के क्षेत्र में व्याप्त अंधकार के प्रति भारतीय जनमानस को जागरूक करने के लिए प्रतिबद्ध था।

- **प्रजातांत्रिक** :– इन ओदोलनों की प्रकृति प्रजातांत्रिक थी। ये जनभागीदारी पर आधारित थे और और अधिक से अधिक लोंगों को अपने साथ जुड़ने के लिए प्रेरित करते थे। इनका लक्ष्य स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व पर आधारित प्रजातांत्रिक संकल्पनाओं को समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए उपलब्ध कराना था। इन आंदोलनों में समाज के सभी शोषित वर्गों जैसे; महिलाओं, दलितों आदी के लिए आवाज उठाई गई और कानून के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था में सुधार की कोशिश की गई।
- **वैधानिक साधनों का प्रयोग** :– इन आंदोलनों में शिक्षा के प्रचार प्रसार पर खास जोर दिया गया। जागरूकता अभियान, उपदेशों, सभाओं, समाचार पत्रों, पत्र पत्रिकाओं आदी का प्रयोग मुख्य रूप से लोंगों को जागरूक करने के लिए किया गया। क्रांतिकारी साधनों का प्रयोग इन आंदोलनों में नहीं किया गया।

आंदोलन की सीमाएं –

- **संकुचित पहुंच** –इन आंदोलनों का नेतृत्व शहरी शिक्षित वर्ग कर रहा था और इन आंदोनलों की पहुंच भी केवल शहरी मध्यवर्ग तक ही सीमित थी। काफी हद तक साधनों के अभाव और अशिक्षा तथा रूढ़ीवादीता के कारण इन आंदोलनों का प्रभाव क्षेत्र सीमित था। गांवों और शहरी गरिब तबका इसके प्रभाव से अछुता रह गया।
- **व्यापकता का अभाव** – इन आंदोलनों के माध्यम से केवल मध्यम और उच्च वर्ग की महिलाओं के प्रति होने वाले शोषण के विरूद्ध आवाज उठाई गई। निम्न वर्ग की महिलाओं के प्रति होने वाले अत्याचारों के विरूद्ध जागरूकता का अभाव देखने को मिला।
- **साम्प्रदायिक बीज** – 19वीं सदी में होने वाले आंदोलनों में भारत में पाए जाने वाले सभी धर्म के लोग अलग अलग अपने धर्म में सुधार के लिए प्रयास कर रहे थे। हिन्दू धर्म के लोग जहां इसके लिए वैदिक कालीन विशेषताओं का प्रयोग कर रहे थे वहीं मुस्लिम धर्म के लोग अपने मध्यकालीन उत्कर्ष का सहारा ले रहे थे। ये दोनों धर्मों के बीच टकराव की स्थिति उत्पन्न कर रहा था। आगे चलकर कई ऐसे संगठन बने जिसने दोनों धर्मों में यथास्थितिवाद को बढ़ावा दिया।
- इन आंदोलनों ने तत्कालीन समय में व्याप्त लगभग सभी सामाजिक, धर्मिक कुरितियों के विरूद्ध आवाज उठाई। लेकिन हम पातें हैं कि आज भी जातिवाद, छुआछुत, बाल विवाह, ब्राहम्णवाद और धार्मिक रूढ़ीवादीता हमारे समाज में विद्यमान है।

सामाजिक सुधार आंदोलन का प्रभाव :–

- समाज के रूढ़ीवादी वर्ग के जबरदस्त विरोध के बावजूद ये आंदोलन पुरोहित वाद के चंगुल से समाज को जागरूक करने में काफी हद तक कामयाब हुए। वैदिक ग्रंथों को आमजनमास तक

सरल भाषा में पहुंचाने की कोशिश की गई ताकि लोग वैदिक ग्रंथों में वर्णित तथ्यों को समझ सकें और धार्मिक अंधविश्वासों से बाहर निकल सकें।

- इन आंदोलनों ने भारतीय जनमानस को अंग्रजों के द्वारा फैलाए गए इस दुष्प्रचार से बाहर निकाला कि भारतीय सभ्यता एक पिछड़ी हुई सभ्यता है और भारतीयों को अपनी सभ्यता और संस्कृति पर गर्व करने का मौका दिया।
- इन आंदोलनों द्वारा आधुनिक, तार्किक, सर्वधर्मसम्भाव और वैज्ञानिक विचारों को बढ़ावा दिया गया। सुधारकों का मुख्य जोर समाज को आधुनिक बनाना था। उसे पश्चिमीकरण का पिछलग्गु बनाना नहीं था। इन आंदोलनो ने भारतीय जनमानस को दूसरे देशों में होने वाले विकास आंदोलनों से परिचित कराया। स्वतंत्रता ,समानता के क्षेत्र में होने वाले आंदोलनों से परिचित कराया। औपनिवेशीकरण के विरूद्ध होने वाले विद्रोह आंदोलनों से परिचित कराया।
- सुधारवादीयों का बहुत जोर समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार के प्रति था। इसके लिए स्त्री शिक्षा पर जोर तथा कई अमानवीय प्रथाओं के प्रति समाज को जागरूक करना इनका मुख्य उद्देश्य था। 19वीं सदी में होने वाले इन सुधार आंदोलनों का ही प्रभाव था की सती प्रथा जैसे शोषणकारी, अमानवीय प्रथा के विरूद्ध कानून बनाकर उसे अपराध घोषित किया गया। विधवा महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए विधवा पुर्नविवाह कानून को 1956 में मंजूरी मिली। बालिकाओं की विवाह के लिए उम्र में रूढ़ीवादीओं के कड़े विरोध के बावजूद भी कुछ सुधार किए गए। स्त्री शिक्षा के लिए हुए प्रयासों का ही परिणाम था की हमें स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी दिखाई पड़ती है।
- राष्ट्रीय जागरण आंदोलनों ने भारत में राष्ट्रवाद की नींव रखीं। इसनें राजनीतिक मामलों से अनभिज्ञ भारतीय जनता को राजनीतिक मामालों के प्रति जागरूक किया। स्वराज की अवधारणा से भारतीयों को परिचित कराया और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को स्वशासन की ओर उनमुख किया।
- हमारे संविधान का दर्शन इन सुधार आंदोलनों से प्रभावित दिखता है। समानता, स्वतंत्रता, गरिमा, विश्वबंधुत्व आदी तत्वों की चर्चा जिस संदर्भ में हमारे संविधान में की गई है उसकी झलक हमें इन सुधार आंदोलनों में दिखाई पड़ती है।